

16. कृषि में महिला सशक्तिकरण

कृषि में महिलाएं एक महत्वपूर्ण भाग अदा करती हैं। महिलाएं कृषि संबंधी अनेक क्रियाओं में सक्रिय भागीदारी निभाकर कृषि के स्थाई विकास में योगदान देती हैं। कृषि के समावेशी विकास को प्राप्त करने के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक है जिसके लिए उनकी भागीदारी, लैंगिक पहलू, मशक्कत और स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी जानकारी का होना जरूरी है। इन विषयों को लैंगिक दृष्टिकोण से उपयोगी तकनीक, उसके परिष्कृत रूप और प्रसार के तरीकों से समझा जा सकता है। इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रखकर कृषक महिला अनुसंधान निदेशालय शोध और क्षमता वृद्धि के लिए कार्यक्रम आयोजित कर रहा है।

लैंगिक आधारित कार्य वितरण का परिदृश्य: वर्ष 2001 की जनगणना पर आधारित आंकड़ों के अनुसार पुरुष और महिला के बीच कार्य सहभागिता का सबसे आदर्श राज्य मिजोरम है जहां यह आंकड़ा 0.093 है इसके बाद मणिपुर (0.094), नगालैंड (0.10) और हिमाचल प्रदेश (0.11) हैं। जिन राज्यों में लैंगिक आधारित कार्य वितरण में सबसे अधिक असमानता है उसमें उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, केरल, पश्चिम बंगाल और ओडिशा शामिल हैं।

मध्य प्रदेश में धान आधारित फसल प्रणाली में महिलाओं की सहभागिता 40.51 प्रतिशत है जबकि पुरुषों की 59.49 प्रतिशत है। महिलाओं की सबसे अधिक भागीदारी धान की फसल में (78.18 प्रतिशत) और इसके बाद गेहूं (12.76 प्रतिशत), मटर (3.22 प्रतिशत) और उड़द (2.41 प्रतिशत) में है। आदिवासी महिलाएं वन संबंधी उत्पादों के लिए औसतन 158 महिला दिवस प्रति वर्ष कार्य करके 150 रुपये प्रति महिला दिवस प्राप्त करती हैं।

बेहतर विपणन प्रणाली के लिए 62 प्रतिशत आदिवासी महिलाओं ने निकटवर्ती बाजार होने, 37 प्रतिशत ने व्यापारियों की बजाय सीधे उपभोक्ताओं को उत्पाद बेचने, 31 प्रतिशत ने बेहतर परिवहन सुविधा देने, 25 प्रतिशत ने भंडारण सुविधा देने, सात प्रतिशत ने सरकारी एजेंसियों द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करने और दो प्रतिशत ने आश्रय स्थल विकसित करने का सुझाव दिया। व्यापारियों ने आदिवासी महिलाओं के विपणन संबंधी ज्ञान को और बढ़ाने का सुझाव दिया।

संसाधनों तक पहुंच और नियंत्रण: तीन से चार प्रतिशत महिलाओं के पास जमीन का मालिकाना हक है और लगभग इतने ही महिलाओं के पास घर हैं। उनका मालिकाना हक प्रमुख रूप से तालाबों, बंजर, चारागाह और बारानी जमीन पर है। औसतन 2.18 प्रतिशत महिलाएं पारिवारिक संसाधनों पर नियंत्रण रखती हैं जबकि 48.15% पुरुषों के पास पारिवारिक संसाधनों का नियंत्रण होता है। महिलाओं के पास घर के पिछवाड़े वाले संसाधन ही प्रमुख रूप से होते हैं। पारिवारिक संसाधनों तक पहुंच 6.80% महिलाओं की होती है जबकि 34.69 प्रतिशत पुरुषों की होती है। पारिवारिक संसाधनों पर संयुक्त नियंत्रण और पहुंच क्रमशः 36.37 प्रतिशत और 58.52 प्रतिशत होती है। घरेलू पशुओं पर पुरुषों का नियंत्रण अधिक होता है जबकि महिलाओं और पुरुष की लगभग समान पहुंच (12.52 प्रतिशत और 12.71 प्रतिशत) होती है।

महिलाओं की धान आधारित उत्पादन प्रणाली में जरूरतें और प्राथमिकताएं: मध्य प्रदेश के पांच चावल उत्पादन वाले जिलों के विवरण से ज्ञात हुआ कि चावल आधारित फसल प्रणाली में 37.51 प्रतिशत को सब्जियों, 32.68 प्रतिशत को दालों, 20.70 प्रतिशत को तिलहनी, 5.84 प्रतिशत को अनाज, 2.10 को मसाले, 0.70 प्रतिशत को चारा और 0.47 प्रतिशत को ऊर्जा के लिए लकड़ी की कमी है। ज्यादातर उत्तरदाताओं ने इच्छा जाहिर की कि वे दालों (84.34 प्रतिशत) और सब्जियां (49.90 प्रतिशत) का उत्पादन करना चाहेंगे। स्वाद, पकाने पर विस्तार, बनावट, रंग, बाजार में विपणन की सुविधा के आधार पर, स्थानीय चावल की किस्में माधुरी, मेनका और गेहूं की सुजाता एवं डब्ल्यूएच 147 को ज्यादातर महिलाओं ने पसंद किया। इस बिंदु को नई किस्मों को तैयार करने और सुधारने के विचारार्थ स्वीकार किया जा सकता है।

अंतर्देशीय मत्स्य पालन में महिलाओं की सहभागिता: अंतर्देशीय मत्स्य पालन में महिलाओं की बराबर की सहभागिता को परखने के लिए एक कार्यक्रम नबादविप और कलना के ऊपरी हिस्से तथा हुगली के निचले क्षेत्रों के डायमंड हार्बर और फ्रेजरगंज में हुआ। इसमें ऊपरी हिस्से के कार्यक्रम में महिलाओं की सहभागिता निचले क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता से कम रही। निचले क्षेत्र में मछली के बीज एकत्रित करने और बेचने, मछली का श्रेणीकरण



हुगली एस्चुअरी में कार्यरत महिलाएं

करने, वेंडिंग, सुखाने और प्रसंस्करण में महिलाओं की अधिक भागीदारी रही। इसके अलावा महिलाएं आय के अन्य स्रोतों जैसे कृषि और दैनिक श्रम में भी हिस्सेदारी करती हैं। मछली पालन में महिलाओं की भागीदारी मध्यम स्तर पर 62 प्रतिशत, उच्च स्तर पर 16 प्रतिशत और शेष निचले स्तर पर है। महिलाओं की इस सक्रिय भागीदारी की वजह से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने में काफी मदद मिली है।

महिलाओं द्वारा वैज्ञानिक तरीके से पशुधन प्रबंधन: इस क्षेत्र में कृषक महिलाओं को सबसे अधिक दिक्कत चारागाह संसाधनों (86.7%), टीकाकरण और स्वच्छता के बारे में जागरूकता की कमी (83.3 प्रतिशत), पशु चिकित्सा की उचित सेवाएं उपलब्ध

ओडिशा की कृषक महिलाओं में आईसीटी को लेकर जागरूकता

आईसीटी की सुविधाओं को लेकर कृषक महिलाओं पर किए गए अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि 50 प्रतिशत महिलाओं को अपने गांव के पीसीओ बूथ के बारे में जानकारी होती है जबकि केवल 20 प्रतिशत को अपने गांव की सूचना केंद्र/कयोस्क की जानकारी होती है। सिर्फ एक महिला को टोल फ्री किसान कॉल सेंटर के बारे में पता था। रेडियो कार्यक्रमों में कृषि संसार सबसे अधिक (40 प्रतिशत) लोकप्रिय है। इसके बाद महिलाओं पर आधारित नारी महल (20 प्रतिशत) और कृषि शिक्षा (18 प्रतिशत) सबसे लोकप्रिय हैं। टीवी कार्यक्रमों में कृषि दर्शन सबसे लोकप्रिय (36 प्रतिशत) कार्यक्रम है, इसके बाद श्रीमती कम नुहंती (26 प्रतिशत) और पालीश्री (18) हैं। कृषक परिवारों में 70 प्रतिशत के पास टीवी हैं और 75 फीसदी कृषक महिलाओं के पास मोबाइल फोन हैं।

न होने (73.3 प्रतिशत), कम जानकारी और एआई सेवाओं के प्रोत्साहन न देने (66.6 प्रतिशत) से होती है। महिलाएं पशुओं की देखभाल और प्रबंधन में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। पशु गर्भावस्था के दौरान देखभाल (36.7 प्रतिशत), प्रसव के दौरान और इसके बाद (45 प्रतिशत), पशुओं को चारा देने (25 प्रतिशत), पानी देने (48.3 प्रतिशत), नवजात पशुओं की देखभाल करने (50 प्रतिशत), गोबर साफ करने (68.3 प्रतिशत) और पशु आवासों को साफ करने (41.7 प्रतिशत) में सबसे अधिक भागीदारी होती है। हालांकि महिलाओं को वैज्ञानिक तरीके से पशुधन के प्रबंधन और रख-रखाव की विधिवत जानकारी उपलब्ध नहीं कराई जाती है।

महिला-हितैषी उपकरण

भुट्टा तोड़ने के लिए: कृषक महिलाएं खड़े हुए पौधों से 669 मक्का प्रति घंटा और कटे हुए पेड़ से 492 भुट्टा प्रति घंटा तोड़ सकती हैं। खड़े हुए पेड़ से भुट्टे को तोड़ने में 7.3 न्यूटन बल की आवश्यकता होती है। खड़े हुए पौधे से मक्का तोड़ने के दौरान हृदय गति 109 स्पंदन प्रति मिनट और कटे मक्का पौधे से 97 स्पंदन प्रति मिनट होती है। खड़े हुए मक्का के पौधे से भुट्टा खोने की दर (8.1 प्रतिशत), कटे हुए पौधे से (0.5 प्रतिशत) अधिक होती है।

मक्का के भुट्टे से छिलका उतारना: कृषक महिलाएं एक घंटे में 393 मक्के के भुट्टे को छील सकती हैं। इस दौरान हृदय की स्पंदन गति 103 प्रति मिनट होती है। बाहरी छिलके को उतारने के लिए बल की आवश्यकता 2.94 न्यूटन और तीसरे और चौथे छिलके को उतारने के लिए 19.7 न्यूटन बल की आवश्यकता होती है। इस क्रिया में पंजे का आठ गुना ज्यादा प्रयोग किया जाता है। इसमें कार्य का भार हालांकि कम होता है लेकिन इसे लगातार करने की ज्यादा जरूरत होती है।

हस्त संचालित मक्के के भुट्टे छीलने वाला यंत्र: इसका प्रयोग पांच व्यक्ति या महिलाएं मिलकर कर सकते हैं। इसमें दो से चार सेकंड के अंतराल पर भुट्टा डाला जाता है। इसकी पुरुष श्रमिकों के साथ क्षमता 89.6 किलोग्राम दाना प्रति घंटा है जब इसे 57 आरपीएम गति से घुमाया गया। महिला श्रमिकों के साथ इसकी क्षमता 63.4 किलोग्राम दाना प्रति घंटा है जब इसे 52 आरपीएम पर घुमाया गया। इसमें पुरुषों की हृदय गति 46 स्पंदन और महिलाओं की 51 स्पंदन प्रति मिनट होती है। मक्का छीलने की दक्षता 99.15 प्रतिशत और दाने टूटने की प्रतिशता 0.7 होती है।

पोषण स्तर में लैंगिक अंतर

ओडिशा में किए गए अध्ययन से पता चला कि 52 प्रतिशत महिलाएं और 40 प्रतिशत पुरुष कुपोषण के शिकार हैं। इनका बॉडीमास इंडेक्स (बीएमआई), 18.5 है, जिससे इनमें पोषण की काफी कमी होने का पता चलता है। दोनों लिंगों के सामान्य बीएमआई में अंतर 15.55 प्रतिशत है। पुरुषों का बीएमआई 58.88 प्रतिशत और महिलाओं का 45.55 प्रतिशत है। ऊर्जा की अत्यधिक कमी में दोनों के बीच लैंगिक अंतर 6.67 प्रतिशत है, धान-धान फसली प्रणाली में तीन प्रतिशत पुरुष और सात प्रतिशत महिलाएं ऊर्जा की अत्यधिक कमी से ग्रस्त हैं। अधिकांश महिला और पुरुषों का ब्लड प्रेशर सामान्य होता है। हीमोग्लोबिन की मात्रा के हिसाब से 46 प्रतिशत पुरुष और 60 प्रतिशत से अधिक महिलाएं एनीमिया से ग्रस्त हैं। महिलाओं और पुरुषों में कम हीमोग्लोबिन का अंतर 17 प्रतिशत है।

एनएआईपी परियोजना- तमिलनाडु और ओडिशा के किसानों को मूरैल की वैल्यू चैन के अंतर्गत मूरैल के मूल्यवर्धन के बारे में प्रशिक्षित किया गया। ओडिशा की कृषक महिलाओं को इसके लिए मूरैल का अचार, सूप, कटलेट और बॉल बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। कई महिलाओं ने इस तकनीक को अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए अपनाने में गहरी रुचि दिखाई।

खारे पानी में मत्स्य पालन: समुद्रतटीय इलाकों की महिलाओं को मत्स्य पालन की सहायता से सशक्त बनाने के लिए तिरुवल्लूर और कांचीपुरम जिलों में संभावनाओं को परखा गया। वर्ष 2004 में सुनामी ने उनकी संपत्ति और मछली नौकाओं, जाल आदि को नष्ट कर दिया। ऐसे में तटीय इलाकों के लिए आय के अतिरिक्त स्रोतों को तलाशा गया। इस समस्या का समाधान खारे पानी में मत्स्य पालन को सरकारी संस्थानों, एनजीओ, बैंक, अनुसंधान और स्थानीय समुदाय के सहयोग से बढ़ावा देकर हल करना संभव है।

जलजीव पालन और विपणन में महिलाओं की भागीदारी: घरेलू मछली बाजार में महिलाओं की भागीदारी को लेकर एक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन पश्चिम बंगाल के 24 परगना (दक्षिण) के फुटपाथ बाजार (4), फुटकर बाजार (2) और थोक बाजार (2) पर किया गया। व्यापार शुरू करने के लिए शुरुआत में 200 से 2400 रुपये की आवश्यकता होती है। अध्ययन में शामिल उद्यमियों में से 89.21 प्रतिशत ने निजी साहूकारों से अपने व्यापार के लिए धन लिया और 10.52 प्रतिशत ने घरेलू स्रोतों से धन लिया। अधिकांश (92.10 प्रतिशत) अपने घरेलू स्थानों से दूर मछली बेचने का कार्य करती हैं। इनमें से कुछ (5.20 प्रतिशत) अपने आस-पास के इलाकों में और शेष ग्रामीण और शहरी इलाकों में मछली बेचती हैं। अध्ययन में क्षमता वृद्धि पर जोर दिया गया जिससे महिलाएं अपने लाभ को और अधिक बढ़ा सकें।

लैंगिक आधार पर डाटाबेस: विभिन्न कृषि क्रियाओं जैसे खेती, कटाई उपरांत प्रबंधन, उद्यान फसल उत्पादन, पशुधन प्रबंधन, मछली पालन और कृषि फार्म सहित 124 क्रियाओं पर लिंग आधारित डाटाबेस तैयार किया गया। इसमें लैंगिक आधार पर सहभागिता, रोल और जिम्मेदारियां, संसाधनों तक पहुंच और नियंत्रण आदि आंकड़ों को कृषि विशिष्ट गतिविधियों के आधार पर एकत्रित किया गया। सभी खेती और संबंधित क्रियाओं में कृषक महिलाओं की सहभागिता मिली जबकि कृषक महिलाओं की संसाधनों तक पहुंच तो आसान है पर नियंत्रण काफी कम है।

प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण मॉड्यूल: मशक्कत में कमी करने वाली नवीन तकनीकों की जानकारी देने के लिए प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया गया है जो कृषि में महिलाओं को प्रशिक्षित करके उसके प्रभाव को जानेगा। इसके लिए चिन्हित क्षेत्र कपड़ों की सुरक्षा करना, सिसल फाइबर में उद्यमिता, बच्चों के कपड़े डिजाइन करना, बुनाई, लकड़ी की प्राकृतिक डाई, रंग बनाना, प्राकृतिक डाई से ब्लाक प्रिंटिंग, शिल्पकता, घरेलू स्तर पर दाग-धब्बों को हटाना और कपड़ों की डिजाइनिंग और उन्हें बनाने का प्रशिक्षण शामिल है।

मशक्कत में कमी: सुधरा हंसिया और खुरपी को अपनाने की प्रवृत्ति पुरुषों में अधिक है जबकि महिलाओं में (50 प्रतिशत से अधिक) भुट्टे छीलने वाले यंत्र के साथ हंसिया, खुरपी की लोकप्रियता अधिक है। कपास एकत्रित करने के लिए पहना जाने वाला कपड़ा, मूंगफली छिलका हटाने वाली मशीन, हस्त रेक, रिंग और त्रिशूल खरपतवारनाशकों को 50 प्रतिशत महिलाओं ने अपनाया है। विभिन्न उद्यम जैसे खाद्य प्रसंस्करण, स्वयं सहायता समूहों की मदद से सामुदायिक खाना बनाना, बांस का शिल्प, रजाई बनाना, डेरी, सब्जियों को उगाना जैसे कार्य अधिक मशक्कत वाले कार्यों के रूप पहचान की गई है।

स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा: घर में ही पोषण बाग लगाने के लिए प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए गए। लौह तत्व की कमी (एनिमिया) को कम करने के लिए प्रत्येक केंद्र ने लौह तत्व से भरपूर लेहयम नामक उत्पाद तैयार किया। इसे तैयार करने में अपेक्षाकृत कम लोकप्रिय सब्जियों की पत्तियों का प्रयोग किया गया। उदयपुर केंद्र ने बिना किसी सब्जी की पत्तियों को प्रयोग किए लेहयम सिर्फ कमल के तने से तैयार किया। कमल के तने में काफी अधिक मात्रा में लौह तत्व होता है। रोजमर्रा की दिनचर्या में संतुलित आहार के महत्व को बताने, गर्भावस्था और इसके उपरांत

अतिरिक्त खाद्य आवश्यकताओं, महिलाओं के दूध के महत्व, छोटे बच्चों को मां के दूध के अलावा अतिरिक्त खाद्य पदार्थ देने, पोषक खाद्य पदार्थ घर पर ही तैयार करने, किचन गार्डन की महत्वता बताने आदि के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए।

व्यावसायिक हुनर: युवतियों और युवा माताओं में पालनाघर (क्रेच) के व्यावसायिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण आयोजित किए गए जिसमें उन्हें प्रबंधन, शैक्षणिक खेलों, साफ्ट टॉय बनाने, खाद्य सामग्री को संरक्षित रखने, विभिन्न उपयोगी सामान बनाने और छोटे बच्चों के कपड़े बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

खेती के नष्ट न होने वाले अवयवों का उपयोग: खेती के अपक्षरित न होने वाले अवयवों में प्रमुख रूप से प्राकृतिक फाइबर जैसे केला, जूट, सिसल, भांग और नष्ट न होने वाले अवयवों में नायलान साड़ी, बेकार पालीथीन के बैग का प्रयोग फाइल, पर्स, बैग, आसन दरी, मेज के मैट, पैरों के लिए मैट, रनर और फोटो फ्रेम बनाने में किया जाता है।

आजीविका सुरक्षा: इसके लिए समूह प्रशिक्षण के माध्यम से, विभिन्न सदस्यों के बीच सफल सदस्यों की सूचना और विचारों का प्रवाह बनाए रखने, सदस्यों को निरंतर सहायता और प्रोत्साहन देकर, माइक्रो फाइनेंस रणनीति से स्वयं सहायता समूहों को मजबूत बनाने पर जोर दिया जा रहा है। प्रयास किया गया है कि स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को बचत के लिए प्रोत्साहित किया जाए और उन्हें ऋण का सही प्रयोग करने के लिए दिशा दी जाए। सदस्यों को उद्यमिता कौशल जैसे टाई एंड डाई, वर्मी कंपोस्टिंग, डेरी, आटा मिल, हस्तकला, वीडियो फिल्म, महिला मंडल (महिला उद्यमियों की सफलता की कहानी) आदि से सुसज्जित किया जाए। कई स्वयं सहायता समूहों ने इन कौशलों का विकास करने के लिए माइक्रो एंटरप्राइज इकाइयां भी स्थापित की हैं।

■